जूझ

1. लेखक को मास्टर जी से किस प्रकार की कविताएँ लिखने की प्रेरणा मिली?

लेखक को मास्टर जी से अपने आसपास, गाँव, खेत, फसल फल-फूल, पशु आदि पर कविता करने की प्रेरणा मिली।

2. जूझ शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथानायक की किसी केन्द्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है।

पाठ का शीर्षक 'जूझ' संपूर्ण कथा के केन्द्र में निहित है। 'जूझ' का अर्थ है संघर्ष। कथानायक आनंदा ने पाठशाला जाने के लिए संघर्ष किया। उसको पाठशाला में भी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ा। तभी वह मॉनीटर बन सका। उसने कवि बनने के लिए संघर्ष किया। पत्थर की शिला या भैंस की पीठ पर कविता लिखी। आशय यह है कि संपूर्ण कथा में नायक ने संघर्ष किया।

3. लेखक कवियों को आदमी क्यों समझने लगा? पहले वह उन्हें क्या समझता था?

लेखक पहले कवियों को किसी अन्य लोक की महान आत्माएँ मानता था। परंतु जब उसने अपने मास्टर जी को कविता करते देखा तो उसे लगा कि ये कवि भी उसकी तरह हाड़-माँस के आदमी होते हैं।

4. स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?

लेखक के मराठी के अध्यापक न.वा. सौंदलगेकर स्वयं कविता लिखते थे। वे कक्षा में गणित पढ़ाते समय सस्वर कविता पाठ करते थे। वे लय, छंद, यति-गति, आरोह-अवरोह का ज्ञान कराते थे। कविता के भाव उनके मुख पर झलकते थे। लेखक अध्यापक से बहुत प्रभावित हुए। जब लेखक ने देखा कि अध्यापक ने घर की मालती लता पर कविता लिख दी है, तब उसे

ये आभास हुआ कि कवि भी हमारे समान ही हाड़-मौस, क्रोध-लोभ का मनुष्य होता है। इससे प्रेरित होकर इसे लगा कि अपने आसपास, अपने गाँव, अपने खेतों में, कितने ही ऐसे दृश्य हैं, जिन पर मैं कविता बना सकता हूँ। उसने तुकबंदी प्रारंभ की। फिर उसे विद्यालय में काव्यपाठ का अवसर मिला। फिर गायन का मौका मिला। तब उसे यह आत्मविश्वास हुआ कि वह भी कविता बना सकता है

5 लेखक के पंख कब निकले?
जब लेखक द्वारा बनाई गई मनोरंग लय को बच्चों के सामने प्रस्तुत कराया गया। उसके गीत को स्कूल के समारोह में गवाया गया तो उसे बहुत उत्साह मिला। उसे यों लगा मानो पंख लग गए हो।

6 श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं को रेखांकित करें जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रुचि जगाई।
श्री सौंदलगेकर लेखक की पाठशाला में मराठी के अध्यापक थे। वे मराठी पढ़ाने आते थे। पढ़ाते समय वे स्वयं रम जाते थे। विशेषत: वे कविता बहुत ही उत्तम ढंग से पढ़ाते थे। सुरीला गला, लय की बढ़िया चाल और उसके साथ ही रसिकता था। पुरानी-नई मराठी कविताओं के साथ-साथ उन्हें अनेक अंग्रेजी कविताएं कंठस्थ थीं पहले वे एकाध कविता गाकर सुनाते थे - फिर बैठे-बैठे अभिनय के साथ कविता का भाव-ग्रहण कराते। उसी भाव की किसी अन्य कवि की कविता भी सुनाकर दिखाते। बीच में कवियों के साथ अपनी मुलाकात के संस्मरण सुनाते। वे स्वयं भी कविता करते थे। लेखक अपनी आँखों और कानों में प्राणों की सारी शक्ति लगाकर, दम रोक कर मास्टर के हाव-भाव, ध्वनि, गति, चाल और रस पीता रहता।
वे लेखक की तुकबंदी का संशोधन करते थे। लेखक रात में ही अपनी कविता मास्टर को दिखाने

पहुँच जाता। वे उसे देखते और शाबाशी देते। मास्टर बताते- कविता की भाषा कैसी होनी चाहिए, संस्कृत भाषा का प्रयोग कविता के लिए किस तरह होता है। छंद की जाति कौन से पहचानें आदि अनेक बातें बताते। लेखक को उनके प्रति अजीब महसूस होता। वे लेखक को पुस्तक देते। कविता संग्रह देते

7. लेखक को अकेलेपन में आनंद कैसे आने लगा?
जब से लेखक ने लय, गति और ताल के साथ कविता बोलना गाना और उनका अभिनय करना सीखा, तब से उसे अकेलेपन में आनंद आने लगा। अब वह खुलकर गा सकता था, अभिनय कर सकता था और अकेले में नाच भी सकता था।

8. कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की भाषा में क्या बदलाव आया?
कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद लेखक की भाषा के विषय में लेखक स्वयं कहता है- इन कविताओं के साथ खेलते हुए मुझे दो बड़ी शक्तियाँ प्राप्त हुईं। पहले ढोर चराते हुए पानी लगाते हुए दूसरे काम करते हुए, अकेलापन बहुत खटकता था- किसी के साथ बोलते हुए, गपशप करते हुए, हँसी मजाक करते हुए काम करना अच्छा लगता था- हमेशा कोई न कोई साथ में होना चाहिए, ऐसा लगता था। लेकिन अब अकेलेपन से कोई ऊब नहीं होती। लेखक अपने आप से ही खेलने लगा। उल्टा अब उसे अकेले ही ज्यादा अच्छा लगने लगा। इस कारण कविता ऊँची आवाज में गाई जा सकेगी। अभिनय किया जा सकेगा। धुई-धुई करके नाचा जा सकता था। लेखक नाचने लगता। लेखक ने कविताओं को खुद अपनी चाल में गाना शुरू किया।

9. वसंत पाटिल की नकल करने पर लेखक को क्या लाभ हुआ?
वसंत पाटिल कक्षा का सबसे होशियार बच्चा था उसकी नकल करने पर लेखक भी गणित में होशियार

हो गया। अतः वह भी ऑनीरर जैसा सम्मान पाने लगा। अध्यापक उसे शाबाशी देने लगे।

10. आपके ख्याल से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का?

हमारे विचार में पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही है। लेखक के पिता का रवैया अनुचित है। लेखक की यह सोच कि "पढ़ जाऊँगा तो नौकरी लग जाएगी, चार पैसे हाथ में रहेंगे, विठोबा अण्णा की तरह कुछ धंधा कारोबार किया जा सकेगा" एकदम सही है। वह सोचता है कि 'जनम भर खेत में काम करते रहने पर भी हाथ कुछ नहीं लगेगा।

दत्ता जी राव ने लेखक के पिता को धमकाया और लेखक को पाठशाला भिजवाया तथा यहाँ तक कहा कि यदि तुझे पाठशाला जाने से तेरा बाप रोके तो मेरे पास आ जाना, मैं तुझे पढ़ाऊँगा।

लेखक के पिता का पढ़ने लिखने के बारे में यह रवैया "तेरे ऊपर पढ़ने का भूत सवार हुआ है, मुझे मालूम है बालिस्टर नहीं होने वाला है तू" एकदम अनुचित है। वास्तव में वह स्वयं अय्याशी करने के लिए तथा पुत्र को खेती में झोंकने के लिए उसे पढ़ाई से रोकता है।

11. दादा ने अपने बेटे के सामने स्कूल जाने के बदले क्या शर्त रखी?

दादा ने अपने बेटे के सामने स्कूल जाने के बदले यह शर्त रखी कि वह स्कूल से पहले खेत में जाएगा और पानी देगा। वह ग्यारह बजे तक पानी लगाने के बाद वहीं से स्कूल जाएगा। बाद में स्कूल से आने के बाद एक घंटा पशुओं को चराएगा। यदि कभी खेतों में अधिक काम हुआ तो पाठशाला नहीं जाएगा।

12. दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी माँ को एक झूठ का सहारा लेना पड़ा। यदि झूठ का सहारा न लेना पड़ता तो आगे का घटनाक्रम क्या होता?
लेखक और उसकी माँ दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए गए थे। अपनी समस्या रखने के बाद दोनों ने उठते-उठते दत्ता जीराव से कहा – "हमने यहाँ आकर ये सभी बातें कही हैं यह मत बता देना, नहीं तो हम दोनों की खैर नहीं है। माँ अकेली साग-भाजी देने आई थी। यह बता देंगे तो अच्छा होगा। ऐसा ही झूठ लेखक की माँ ने अपने पति से बोला था –
आते ही माँ ने दादा से कहा "सागभाजी देने देसाई सरकार के यहाँ गई थी तो उन्होंने कहा कि बहुत दिनों से तेरा मालिक दिखाई नहीं दिया है खेत से आ जाने पर जरा इधर भेज देना।
यदि इन झूठों का सहारा न लिया जाता तो दादा की नाराजगी बढ़ जाती। संभवतः दोनों की खूब पिटाई होती। दादा उसके घर जाने से भी बचता। दादा लेखक को पढ़ने नहीं देता।

13. दादा राव साहब के सामने लेखक को स्कूल भेजने के लिए कैसे माना?
दादा राव साहब के दबाव में आ गया। जब राव साहब ने उसे कामचोरी और आवारागर्दी के लिए खूब डाँटा तो उसकी घिग्घी बँध गई। उसने मजबूरी में लड़के को स्कूल भेजने की अनुमति दे दी।

14. लेखक के चरित्र की कौन सी विशेषताएँ आपको प्रभावित करती हैं?
लेखक की निम्न विशेषताएँ पाठक को आकर्षित करती हैं।
पढ़ने की ललक- लेखक पिछले डेढ़ वर्ष से पाठशाला नहीं जा रहा था। फिर भी उसके मन में पढ़ने की बलवती इच्छा है।
दूरदर्शी- लेखक यह जानता है कि राव सरकार के

आदेश का पालन दादा को करना ही पड़ेगा, वह यह भी जानता है कि राव सरकार से दबाव हम माँ बेटे ने डलवाया है, यह जानकर दादा क्रोधित होकर खेल बिगाड़ सकता है। अतः झूठ के सहारे का प्रस्ताव स्वयं करता है। छोटा सा बालक यह भी जानता है कि पढ़ने से नौकरी मिलेगी या काम धंधा किया जा सकता है।

कठोर परिश्रमी - वह प्रातः खेत पर चला जाता है, फिर पाठशाला जाता है फिर लौट कर ढोर चराने जाता है। सारे दिन कार्य करता है।

लगनशील - प्रत्येक काम तन्मयता से करता है। कक्षा में शीघ्र ही होनहार बच्चों में गिना जाने लगता है।

अध्यापकों का चहेता - अध्यापक इस बालक से प्रभावित हैं। गणित मास्टर उसे मॉनीटर के समान कार्य देते हैं। मराठी मास्टर के पास वह रात में ही कविता सुनाने पहुँच जाता है।

15. लेखक ने राव साहब के सामने किस प्रकार निडरता का परिचय दिया?

लेखक ने राव साहब के सामने अपने पिता की सारी पोल खोल दी। उसने बताया कि उसका दादा उसे कभी सिनेमा देखने के लिए पैसे नहीं देता बल्कि उसने गोबर बीन-बीनकर माँ से कंडे थपवा लिए थे। उन्हीं पैसों से उसने कपड़े बनवाए थे और एक बार सिनेमा भी देखा था।

16. डेढ़ साल से घर बैठा लेखक पुनः पाठशाला कैसे पहुँचा?

वह माँ से पढ़ने भेजने की बात करता है। माँ की असमर्थता देखकर वह राव सरकार की सहायता का सुझाव देता है। माँ बेटे दत्ता जी राव के यहाँ जाते हैं और उनका आश्वासन मिल जाने के बाद यह सुझाव देता है कि माँ और बेटे

के राव सरकार के यहाँ आने की बात दादा को न बताएँ। वह दत्ता जी राव के सामने अपने पढ़ने की इच्छा को व्यक्त करता है। जब दत्ता जी के दबाव में दादा पाठशाला भेजने को अपनी शर्तों पर तैयार होते हैं तो उनकी शर्तों को भी स्वीकार कर लेता है। इस तरह लेखक पुनः पाठशाला जा सका

17. दादा ने राव साहब के सामने अपने बेटे पर क्या आरोप लगाए?
दादा ने राव साहब के सामने कहा कि यह यहाँ वहाँ कुछ भी करता है। कभी कंडे बेचता है, कभी चारा बेचता है, कभी सिनेमा देखता है, कभी खेलने जाता है। वह खेती और घर के काम में जरा भी ध्यान नहीं देता है।

18. पाठशाला पहुँच कर लेखक को किन परेशानियों का सामना करना पड़ा?
कक्षा में गली के दो लड़कों के अतिरिक्त सब अपरिचित थे। लेखक जिन्हें अपने से बुद्धिहीन समझता था, उन्हीं के साथ बैठने को बाध्य था। उसके कपड़े भी कक्षा-लायक नहीं थे। पिछली कक्षा की किताब-कॉपियाँ थी। वह सिर पर गमछा और मटमैली धोती पहने हुए था। इसे देखकर लड़कों ने उसकी खिल्ली उड़ाई। उसने लेखक का गमछा छीन लिया। छुट्टी के समय दो बार उसकी धोती की लाँग खींचने की कोशिश की गई।

19. राव साहब ने लेखक को क्या निर्देश दिया?
राव साहब ने लेखक को उसके पिता के सामने कहा कि वह कल से स्कूल जाना शुरू करे और मन लगाकर पढ़ाई करे। यदि उसका पिता उसे फीस आदि न दे तो वह उसके पास चला आए। राव साहब खुद उसे पढ़ाएँगे।

20. 'जूझ' के आधार पर राव साहब का चरित्र-चित्रण कीजिए।

राव साहब गाँव का सम्मानित जमींदार है। कभी लेखक के दादा उन्हीं के खेतों पर काम करते थे। वे बड़े नेक-दिल, उदार और रौबीले इंसान हैं। वे बच्चों और स्त्रियों से कोमल व्यवहार करते हैं। वे परदुखकातर हैं। वे सहायता माँगने आए व्यक्ति की बात पूरी सहानुभूति से सुनते हैं तथा यथा संभव उसकी सहायता करते हैं।